चरित्र–प्रधान उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का योगदान

प्रो0 रश्मि कुमार

हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ

संक्षिप्त सार- प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाआ परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। अपनी कहानियों से प्रेमचंद मानव स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं। बड़े घर की बेटी , आनन्दी अपने देवर से अप्रसन्न हुई , क्योंकि वह गंवार उससे कर्कशता से बोलता है और उस पर खींचकर खड़ाऊँ फेंकताहै। जब उस अनुभव होता है कि उनका परिवार टूट रहा है और उसका देवर परिताप से भरा है तब वह उसे क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत करती है। इसी प्रकार नमक का दारोगा बहुत ईमानदार व्यक्ति है। घूस देकर उसे बिगाड़ने में सभी असमर्थ हैं। सरकार उसे ,सख्ती से उचित कार्रवाई करने के कारण नौकरी से बर्खास्त कर देती है किन्तु जिस सेठ की घूस उसने अस्वीकार की थी , वह उसे अपने यहाँ ऊँचे पद पर नियुक्त करता है। वह अपने यहाँ ईमानदार और कर्तव्यपरायण कर्मचारी रखना चाहता है। इस प्रकार प्रेमचंद के संसार में सत्कर्म का फल सुखद होता है। वास्तविक जीवन में ऐसी आश्चर्यप्रद घटनाएँ कम घटती हैं। गाँव का पंच भी व्यक्तिगत विद्वेष और शिकायतों को भूलकर सच्चा न्याय करता है। उसकी आत्मा उसे इसी दिशा में ठेलती है। असंख्य भेदों पूर्वाग्रहों अन्धविश्वासों जात – पांत के झगड़ों और हठधर्मियों से जर्जर ग्राम – समाज में भी ऐसा न्याय – धम कल्पनातीत लगता है ।

शब्द संकेत : प्रेमचंद, कर्तव्यपरायण, हठधर्मियों, अन्धविश्वासों, असमर्थ ।

विषय प्रवेशः

हिन्दी में उपन्यास के साहित्यिक रूप का विकास बीसवीं शताब्दी में हुआ । हिन्दी का प्रथम साहित्यिक उपन्यास देवकीनंदन खत्री का 'चंद्रकांता' है जो 1891 में प्रकाशित हुआ । इसके बाद उपन्यास का विकास बड़े वेग से हुआ और धीरे धीरे कविता और नाटक से भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर वह आधुनिक साहित्य का सबसे अधिक लोकप्रिय अंग बन गया । इसके विकास की कई श्रेणियां है जिनके द्वारा धीरे धीरे उपन्यास के वास्तविक कला–रूप की प्रतिष्ठा हुई । हिन्दी उपन्यास के क्रमिक विकास का मूल 'तोता–मैना' और 'सारंगा–सदाबृज' जैसी कहानियों में खोजना पड़ेगा जिनका उद्‌गम उत्तर भारत में प्रचलित मौखिक कथाओं से हुआ जान पड़ता है । इन कथाओं का उल्लेख हमें कालिदास के ही समय से मिलता है जब वृद्ध लोग उदयन की कथा सुनाया करते थे । जायसी के 'पद्‌मावत' तथा इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी ' के वस्तु–विन्यास पर इन कथाओं का स्पष्ट प्रभाव मिलता है । प्राचीन काल में जब लोग लिखना पढ़ना नहीं जानते थे और पुस्तकों का नितांत अभाव था, तब संगीत के अतिरिक्त मनोरंजन का एक मात्र साधन कहानियाँ ही थीं । जाड़े की रात में आग के चारों ओर बैठकर वृद्ध लोग उत्सुक श्रोताओं को कोई मनोरंजक प्रेमकथा अथवा भूत–प्रेतों की कहानी सुनाते; जंगल में पेड़ों के नीचे बैठकर ग्वाले और गड़रिए कुछ इसी प्रकार की कहानियों द्वारा अपने साथियों का मनोरंजन करते । समय बीतने पर कुछ कहानियेां को लोग भूल गए, कई कहानियाँ अद्‌भुत प्रकार से एक दूसरे से मिश्रित हो गई और कुछ के विचित्र रूपांतर हो गए । इन कहानियों के समय और लेखक का निर्णय करना असंभव–सा है, किन्तु यह निश्चित है कि ये 1890 के लगभग लिपिबद्ध हुई । सार्वजनिक शिक्षा के प्रचार के साथ ही साथ इनकी मांग बढ़ती गई और ये नित्य अधिक संख्या में प्रकाशित होने लगीं ।

कथा–प्रधान उपन्यास के साथ ही साथ चरित्र –प्रधान उपन्यास भी लिखे जा रहे थे। चरित्र –प्रधान उपन्यासों में पहले हमें उपदेशात्मक उपन्यासों के दर्शन होते हैं। इस प्रकार के उपन्यासों में अयोध्यासिंह उपाध्याय का 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला फूल'; लज्जाराम मेहता का 'हिन्दू गृहस्थ', 'आदर्श दंपति' और 'आदर्श हिन्दू'; पारसनाथ सिंह की 'मँझली बहू'; गिरजाकुमार घोष की 'छोटी बहू' और प्रियम्बदा देवी का ''कलियुगी परिवार' का एक दृश्य' तथा अन्य उपन्यासों की गणना की जा सकती है। गोपालराम गहमरी ने जासूसी उपन्यास लिखने के पूर्व इस प्रकार के कुछ घरेलू उपन्यासों का बंगला में अनुवाद किया जिनमें 'बड़े भाई', 'देवरानी जेठानी', 'दो बहिन', 'तीन पतोहू' और 'सास–पतोहू ' मुख्य हैं। ये अत्यंत साधारण कोटि के उपन्यास थे इनका वस्तु–विन्यास और चरित्र–चित्रण किसी बालक द्वारा पेंसिल से खिंचे किसी साधारण और सरल चित्र के समान है जिसमें कहीं रंग गहरा पड़ गया है और कहीं रंग का पता भी नहीं। इनमें गंभीर परिस्थितियो तथा नाटकीय प्रभावों का बहुत अभाव था। इन उपन्यायों का मूल और महत्व इनके उपदेशों और संदेशों में निहित था। साहित्यिक दृष्टिकोण से इनका कुछ भी महत्व न था।

उनकी अधिकतर कहानियोँ में निम्न व मध्यम वर्ग का चित्रण है।डॉ० कमलकिशोर गोयनका ने की संपूर्ण हिंदी – उर्दू कहानी को प्रेमचंद कहानी रचनावली नाम से प्रकाशित कराया है। उनके अनुसार प्रेमचंद ने कुल ३०१ कहानियाँ लिखी हैं जिनमें ३ अभी अप्राप्य हैं। प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह सोजे वतन नाम से जून १९०८ में प्रकाशित हुआ। इसी संग्रह की पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रतन को आम तौर पर उनकी पहली प्रकाशित कहानी माना जाता रहा है। डॉ० गोयनका के अनुसार कानपुर से निकलने वाली उर्दू मासिक पत्रिका जमाना के अप्रैल अंक में प्रकाशित सांसारिक प्रेम और देश – प्रेम (इश्के दुनिया और हुब्बे वतन)वास्तव में उनकी पहली प्रकाशित कहानी है।उनके जीवन काल में कुल नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए–सोजे वतन ' सप्त सरोज नवनिधि ,प्रेमपूर्णिमा', प्रेम –पचीसी,' प्रेम –प्रतिमा, प्रेम द्वादशी', समरया ,मानसरोवर' भाग एक व दो और फन । उनकी मृत्यु के बाद उनकी कहानियाँ मानसरोवर शीर्षक से 8 भागों में प्रकाशित हुई। प्रेमचंद साहित्य के मुदराधिकार से मुक्त होते ही विभिन्न संपादकों और प्रकाशकों ने प्रेमचंद की कहानियो के संकलन तैयार कर प्रकाशित कराए। उनकी कहानियों में विषय और शिल्प की विविधता है। उन्होंने मनुष्य के सभी वर्गों से लेकर पशु – पक्षियों तक को अपनी कहानियों में मुख्य पात्र बनाया है।उनकी कहानियों में किसानों ,मजदूरों ,स्त्रियों ,दलितों ,आदि की समस्याएं गंभीरता से चित्रित हुई हैं।उन्होंने समाज सुधार,देशप्रेम स्वाधीनता संग्राम आदि से संबंधित कहानियाँ लिखी हैं। उनकी ऐतिहासिक कहानियाँ तथा प्रेम संबंधी कहानियाँ भी काफी लोकप्रिय साबित हुईं। प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में ये नाम लिय जा

सकते हैं –' पंचपरमेश्वर , गुल्ली डंडा ','दो बैलों की कथा , ईदगाह ','बड़े भाई साहब',पूस की रात ', कफन ', ठाकुर का कुआँ ', सद्गति , बूढ़ी काकी ',तावान, विध्वंस ' दूध का दाम',मंत्र आदि।

नाटक:

प्रेमचंद ने संग्राम (1923), कर्बला (1924) और प्रेम की वेदी (1933)नाटकों की रचना की। ये नाटक शिल्प और संवेदना के स्तर पर अच्छे हैं लेकिन उनकी कहानियों और उपन्यासों ने इतनी ऊँचाई प्राप्त कर ली थी कि नाटक के क्षेत्र में प्रेमचंद को कोई खास सफलता नहीं मिली। ये नाटक वस्तुतः संवादात्मक उपन्यास ही बन गए हैं।

प्रेमचन्द की रचना:

,विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाआ परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। अपनी कहानियों से प्रेमचंद मानव स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं। बड़े घर की बेटी , आनन्दी अपने देवर से अप्रसन्न हुई , क्योंकि वह गंवार उससे कर्कशता से बोलता है और उस पर खींचकर खड़ाऊँ फेंकताहै। जब उस अनुभव होता है कि उनका परिवार टूट रहा है और उसका देवर परिताप से भरा है तब वह उसे क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत करती है। इसी प्रकार नमक का दारोगा बहुत ईमानदार व्यक्ति है। घूस देकर उसे बिगाड़ने में सभी असमर्थ हैं। सरकार उसे ,सख्ती से उचित कार्रवाई करने के कारण नौकरी से बर्खास्त कर देती है किन्तु जिस सेठ की घूस उसने अस्वीकार की थी , वह उसे अपने यहाँ ऊँचे पद पर नियुक्त करता है। वह अपने यहाँ ईमानदार और कर्तव्यपरायण कर्मचारी रखना चाहता है। इस प्रकार प्रेमचंद के संसार में सत्कर्म का फल सुखद होता है। वास्तविक जीवन में ऐसी आश्चर्यप्रद घटनाएँ कम घटती हैं। गाँव का पंच भी व्यक्तिगत विद्वेष और शिकायतों को भूलकर सच्चा न्याय करता है। उसकी आत्मा उसे इसी दिशा में ठेलती है। असंख्य भेदों पूर्वाग्रहों अन्धविश्वासों जात – पांत के झगड़ों और हठधर्मियों से जर्जर ग्राम – समाज में भी ऐसा न्याय – धम कल्पनातीत लगता है । हिन्दी में प्रेमचंद की कहानियों का एक संग्रह बम्बई के एक सुप्रसिद्ध प्रकाशन गृह हिन्दी ग्रन्थ–रत्नाकर ने प्रकाशित किया। यह संग्रह नवनिधि 'शीर्षक से निकला और इसमें राजा हरदौल और रानी सारन्धा जैसी बुन्देल वीरता की सुप्रसिद्ध कहानियाँ शामिल थीं।

रचनाओं की रूपरेखा:

इसके कुछ समय के बाद प्रेमचंद ने हिन्दी में कहानियों का एक और संग्रह प्रकाशित किया। इस संग्रह का शीर्षक था प्रेम पूर्णिमा । बड़े घर की बेटी और पंच परमेश्वर की ही परम्परा की एक और अद्भुत कहानी ' ईश्वरीय न्याय' इस संग्रह में थी। शायद कम लोग जानते है कि प्रख्यात कथाकार मुंशी प्रेमचंद अपनी महान् रचनाओं की रूपरेखा पहले अंग्रेजी में लिखते थे और इसके बाद उसे हिन्दी अथवा उर्दू में अनूदित कर विस्तारित करते थे। प्रेमचंद ने रंग भूमि और कायाकल्प उपन्यासों की रूपरेखा भी अंग्रेजी में लिखी थी। प्रेमचंद ने उपन्यास,कहानी नाटक समीक्षा लेख ,सम्पादकीय संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की ,किन्तु प्रमुख रूप से वह कथाकार हैं। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गई थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास 300 से कुछ अधिक कहानियां, 3 नाटक ,10 अनुवाद 7 बाल पुस्तकें तथा हजारों पृष्ठों के लेख ,सम्पादकीय ,भाषण भूमिका पत्र साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है। उन्होंन कहानी और उपन्यास के माध्यम से लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम किया उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास और कहानियां आज भी प्रासंगिक हैं।जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी ,उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और न ही प्रगतिशीलता का कोई मडल ही उनके सामने था सिवाय बांग्ला साहित्य के। लेकिन होते – होते उन्होंने गोदान जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो क एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है

यहाँ दो प्रकार के उपदेशात्मक उपन्यासों––आदर्शवादी पौराणिक उपन्यास तथा चरित्र–प्रधान उपन्यास––की परस्पर तुलना असंगत न होगी। इन दोनों प्रकार के उपन्यासों का उद्देश्य एक ही था–जनता को उपदेश देना––,परंतु पौराणिक उपन्यासों में कथानक पुराणों से लिया गया होता था, उनमें अतिप्राकृत प्रसंगों की अवतारण होती और परंपरागत प्रेम तथा परंपरागत गुणों (स्त्रियों के लिए पातिव्रत और पुरूषों के लिए दया, दाक्षिण्य, सत्य और तपस्या आदि) का अतिरंजित और आदर्शवादी चित्रण हुआ करता था। घरेलू तथा सामाजिक उपदेश–उपन्यासों में प्रतिदिन के घर–घर की सामग्री लेकर कथा–वस्तु गढ़ी जाती थी। उनमें अतिप्राकृत प्रसंगों की अबतारणा न होती, अस्वाभाविकता का लेश भी न होता, वरन् यथार्थ जीवन का अतिशयोक्तिपूर्ण अतिरंजित रूप में चित्रित करते थे कि लोग उनसे घृणा करने लगे और उनसे दूर होने का प्रयत्न करें।

उपदेश के दृष्टिकोण से पौराणिक उपन्यासों को घरेलू उपन्यासों से अधिक सफलता मिली और वे लोकप्रिय भी अधिक हुए । मनोरंजन की दृष्टि से भी पौराणिक उपन्यास अधिक सफल हुए । घरेलू उपन्यासों में कथानक का सौन्दर्य और प्रभावशाली चरित्रों का चित्रण न था, और इनमें लाक्षणिकता का भी अभाव था। इनके चरित्र और नायक इतने तुच्छ और साधारण चित्रित हुए हैं कि जनता उनके सुख दुख को अपना सुख दुख नहीं समझ सकती और उनके विचारों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझती। इसी कारण ये यथार्थवादी घरेलू उपन्यास अपने उद्देश्य में सफल न हो सके। दूसरी ओर पौराणिक उपन्यासों के चरित्र पुराणों से लिए गए थे जो जनता के आदर के पात्र थे और उनका चरित्र पुराणों के आधार पर होने के कारण प्रभावशाली बन पड़ा है। इनके अतिरिक्त पौराणिक उपन्यासों के कथानक को जनता सच समझती थी क्योंकि वे पुराणों और धर्मग्रंथों से लिए गए थे, और उन्हें जनता श्रद्धा से पढ़ती थी, परंतु इन घरेलू उपन्यासों को वह झूठी कहानी मात्र समझती थी, इसीलिए केवल कहानी के लिए पढ़ लेती थी, उस पर श्रद्धा और विश्वास न करती न उससे शिक्षा ग्रहण करने का ही प्रयत्न करती थी।

उपदेश–उपन्यासों के पश्चात् प्रयोगात्मक चरित्र–प्रधान उपन्यास लिखे गए जिनका कथानक सामयिक सामग्री और उपादानों से लिया गया था। मन्नन द्विवेदी का 'रामलाल' (1914) और 'कल्याणी' (1918) तथा शिवपूजन सहाय की 'देहाती दुनिया' (1925) इस दिशा में सराहनीय प्रयत्न हैं। कला की दृष्टि से उनमें कथानक–सौन्दर्य और चरित्र–चित्रण का अभाव है। एक शक्तिशाली चरित्र का मेरूदण्ड न होने के कारण प्रसंगों का महत्व और मूल्य बहुत घट गया है। उनमें चरित्र भी अधिक–से–अधिक केवल रेखा–चित्र और व्यंग्य–चित्र मात्र है। एक महंत के शिष्य बाबा रामलगन दास का एक चित्र देखिए। वह कहता है :

गद्दी का हक मेरा है। उस बेईमान आत्माराम को अक्षर से तो गम्य नहीं है, और हियां हम शारोशत चन्निका परंत घोंट डाले हैं। अच्छा देखेंगे न कैसे अथीथराम मेरे ऐसे ऊंचे बराभन के रहते गद्दी चलायेंगे। इत्यादि'रामलाल' में एक लुहार किशोर का चित्र देखिए :

किशोर लुहार भी महुए पर के बाबा से नहीं डरते थे और हनुमान चालीसा जानने की वजह से बराबर अकड़ा करतें थे। महुए की डाल खड़–खड़ाई नहीं, कि आप अपने घेघ–विभूषित गले से घांय–घांय करते हुए कहने लगते थे :'महाबीर जब नाम सुनावै, भूत पिशाच निकट नहिं आवे।'' इत्यादि एक और चित्र दरोगा जी का 'देहाती–दुनिया' से लीजिए :दरोगा जी के किसी पुश्त में दया की खेती नहीं हुई थी। उनके पिता पटवारी थे। पटवारी भी कैसे? गरीबों की गरदन पर अपनी कलम टेनेवाले। उनकी कलम की मार ने कितनों की कमर तोड़ दी थी, कितने बिना नाधा पैना के हो गए थे, कितनों का देस छूट गया था, कितनों के मुह के टुकड़े छिन गए थे। इत्यादि

ये व्यंग्य–चित्र और रेखा–चित्र वास्तव में अपूर्व हैं, परंतु फिर भी ये चरित्र –चित्रण नहीं है। शायद इन लेखकों मे इससे अधिक प्रतिभा ही न थी। ये उपन्यास सामाजिक और घरेलू जीवन के चित्र उपस्थित करने के उद्देश्य से लिखे गए थे और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस प्रकार के रेखा–चित्र और व्यंग्य–चित्र खींचने से बढ़कर और कोई अच्छा रास्ता भी न था। दलितों के सुंदर और स्पष्ट रेखा–चित्र और अत्याचारियों तथा पाखंडियों के व्यंग्य–चित्र इनमें खूब मिलते हैं। वे किसी एक प्रभावशाली और महान् चरित्र के द्वारा सामाजिक और घरेलू जीवन के सभी चित्र उपस्थित न कर सके, फिर भी रेखा–चित्रों द्वारा ही सभी चित्र चित्रित कर दिए। उपन्यास–कला की दृष्टि से इन उपन्यासों में संक्रांति, संक्रमण बिन्दु और चरम–संधि इत्यादि कुछ भी नहीं है, मनोरंजक और गंभीर प्रसंग बहुत कम हैं, केवल साधारण वर्णन–मात्र हैं और थोड़े से रेखा–चित्र परंतु प्रयोग की दृष्टि से ये सफल रचनाएँ हैं और पिछले उपन्यासकारों को इन रेखा–चित्रों से बहुत सहायता मिली।

प्रयोगात्मक उपन्यासों के पश्चात् वास्तविक कलापूर्ण चरित्र–प्रधान उपन्यास लिखे जाने लगे। प्रेमचंद ने 'सेवासदन' (1918), 'प्रेमाश्रम' (1921), 'रंगभूमि' (1922) और 'कायाकल्प' (1924) शीर्षक उपन्यास लिखे, ब्रजनंदन सहाय ने 'राधाकांत', यदुनंदन प्रसाद ने 'अपराधी', विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' ने 'मां', अवधनारायण ने 'विमाता', जगदीश झा 'विमल' ने 'आशा पर पानी' और शिवनारायण द्विवेदी ने 'छाया' नामक उपन्यास लिखे। और भी कितने उपन्यास लिखे गए। इन सबका कथानक सामयिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन से संबंध रखता है। और इन सबकी मुख्य विशेषता इनका चरित्र–चित्रण है।

यद्यपि ये चरित्र–प्रधान हैं किन्तु इन उपन्यासों में किसी एक शक्तिशाली चरित्र की, जिसके चारों ओर उपन्यास का कथानक गढ़ा जा सके, कमी है। प्रेमचंद को छोड़कर हिन्दी में कोई दूसरा उपन्यासकार एक ऐसे शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण नायक की कल्पना करने में समर्थ नही हुआ, जैसे 'रंगभूमि' में सूरदास और 'प्रेमाश्रम' में ज्ञानशंकर है। जिस प्रकार शरीर में रीढ़ की हड्डी कमजोर होने से शरीर का पूरा कंकाल ढीला और कमजोर हो जाता है, उसी प्रकार नायक के अशक्तिशाली और साधारण होने से उपन्यास का सारा ढांचा कमजोर पड़ जाता है। इसके अतिरिक्त इन उपन्यासों में चरित्रों का क्रमिक विकास बहुत कम पाया जाता है। चरित्रों के क्रमिक विकास में असफल होने के कारण कथानक–सौन्दर्य और वैचित्रय का भी विकास न हो सका, हां, कथा की गति बनाए रखने के लिए कृत्रिम और बाह्य साधनों का सहारा लेना पड़ा; संयोग और दैव–घटनाओं का सहारा लेकर नई–नई कृत्रिम उलझनों की सृष्टि करनी पड़ी। कथा की गति के लिए जिन अस्वाभाविक और सस्ते उपायों का उपयोग किया गया उन्हें देख कर निराश होना पड़ता है। 'उपकारिणी' में बहुत दिनों का खोया हुआ बालक अचानक संयोग से उपन्यास के नायक के रूप में उपस्थित हो जाता है। प्लेग और हैजा तो लेखकों के जेब में रखे रहते हैं, जब कभी कोई विषम परिस्थिति उपस्थित हुई, तुरंत प्लेग और हैजा उसे सुलझा दिया करते थे।

अब तक कथा–प्रधान उपन्यासों में चरित्र किसी परंपरागत अथवा कल्पित प्रकार–विशेष के प्रतिनिधि स्वरूप हुआ करते थे। सभी प्रेमी एक से जान पड़ते थे, सभी एक से चतुर थे। उपन्यास–कला के द्वितीय उत्थान में प्रकार–विशेष का व्यक्तिकरण हुआ। 'कौशिक' रचित 'मां' में घासीराम बनियों का प्रतिनिधि है जो रूपये के लिए सब कुछ करने को उद्यत रहते हैं और श्यामनाथ मां के लाड़–प्यार से बिगड़े हुए धनी और व्यर्थ बालक का प्रतिनिधि है। परंतु लेखक ने अपने यथार्थ चित्रण के बल से उनके स्वभाव की विशेष प्रवृत्तियों के, उनके बात–चीत, रहन–सहन, चाल–ढाल की व्यक्तिगत विशेषताओं के, और उनके चरित्र के अन्य मनुष्यों से भिन्न करनेवाले विशेष लक्षणों के चित्रण द्वारा इन विशिष्ट चरित्रों का व्यक्तिकरण कर दिया है। इस प्रकार श्यामनाथ, घासीराम और विश्वनाथ अपने प्रकार–विशेष के प्रतिनिधि–स्वरूप केवल व्यक्तिवाचक संज्ञा मात्र नहीं रह गए हैं, परंतु उनमें कुछ ऐसी व्यक्तिगत विशेषताएं हैं जो उन्हें उनके प्रकार–विशेष से अलग कर देती है।

चरित्र–चित्रण के क्षेत्र में यह विकास बहुत ही महत्वपूर्ण था। परंतु चरित्र–चित्रण का पूर्ण विकास पहले–पहल प्रेमचंद ने ही प्रकट किया। उन्होंने ही पहले–पहल अपने चरित्रों की शारीरिक और नैतिक विशेषताओं की ओर ध्यान दिया, उनकी व्यक्तिगत रूचि, आदर्श–भावना तथा उनकी कमजोरियों का चित्र पाठकों के सामने उपस्थित किया। उदाहरण के लिए उनके 'सेवासदन' के पद्मसिंह बड़े ही भलेमानुस हैं, परंतु उन्हें लोगों के कहने का इतना अधिक ध्यान है कि वे कितने ही अच्छे कार्य इच्छा रहते हुए भी नहीं कर पाते, अपने सिद्धांतों पर दृढ़तापूर्वक नहीं टिक सकते। फिर भी हृदय के वे बड़े ही उदार, सहृदय और सच्चे आदमी हैं। अपने नाम पर धब्बा लगने से बचाने के लिए उन्होंने अपनी इच्छा के प्रतिकूल सुमन को अपने घर से बाहर निकाल दिया, परंतु जब इसके परिणाम–स्वरूप वह वेश्या बन गई तब उन्हें अपना वह कार्य सुई के समान चुभता रहा। अपनी गाड़ी बेच कर, पैदल ही कचहरी जाकर तथा अन्य आवश्यक खर्चों में कमी करके वे सुमन को पचास रूपये महीने देने को तैयार हैं, परंतु अपने घर पर अथवा पार्क में भी उससे मिलना उन्हें रूचिकर नहीं। इसी प्रकार सदनसिंह, सुमन, गजाधरप्रसाद इत्यादि सभी चरित्रों की शक्ति और दुर्बलताएं, उनके सामाजिक, नैतिक और शारीरिक स्वभाव और विशेषताएं, उनके चरित्रका उत्थान और पतन, सभी कुछ बड़ी सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है।

फिर प्रेमचंद ने ही पहले पहल दिखाया कि मानव–चरित्र कोई स्थिर वस्तु नहीं है, और न वह केवल श्याम है न केवल श्वेत ही वरन् उसमें श्वेत और श्याम का मिश्रण है, वह सर्वदा गतिशील है। प्रत्येक मनुष्य के चरित्र पर उन सभी मनुष्यों का प्रभाव पड़ता है जो उसके संपर्क में आते हैं, उन सभी वस्तुओं का प्रभाव पड़ता है जिनसे वे घिरे हैं, उन सभी परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है जिनसे उनका संबंध है। स्वयं लेखक एक स्थान पर लिखता है :मानव चरित्र न बिल्कुल श्याम होता है न बिल्कुल श्वेत। उसमें दोनों ही रंग का विचित्र सम्मिश्रण होता है। किन्तु स्थिति अनुकूल हुई तो यह ऋषि तुल्य हो जाता है। प्रतिकूल हुई तो नराधम।

'प्रेमाश्रम' में ज्ञानशंकर इसी प्रकार का एक चरित्र है। हृदय से वह बुरा आदमी नहीं है परंतु परिस्थितियों के षड्यंत्र से उसका इतना पतन होता है कि वह हत्या तक कर डालता है। 'सेवासदन' में सुमन के चरित्र में इसका एक बहुत ही सुंदर उदाहरण मिलता है कि जीवन के गंभीर और महत्वपूर्ण कार्य केवल उन लोगों के प्रभाव मात्र से संघटित नहीं होते जिनसे भाग्यवश मानव का संपर्क हो जाता है, वरन् घर, गली, नगर, व्यवसाय, बचपन के स्वभाव और विचार तथा माता–पिता से सीखी हुई बातों का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। गजाधरप्रसाद के एक छोटी सी बात पर झगड़ा होने के कारण ही सुमन घर छोड़कर नहीं निकल गई थी, वरन् उसके पति की थोड़ी आय

का, जिस घर मे वह रहती थी उस छोटे से घर का, उस पतली गली का जिसमें से शहर के शोहदे और आवारा लड़के उसके घर के दरवाजे को घूरते हुए और उर्दू की भद्दी कुरूचिपूर्ण गजलें गाते हुए निकल जाया करते थे, नगर के उस नैतिक आदर्श का जहां वेश्या भोलीबाई मंदिर में ठाकुरजी के सामने नाचती गाती थी और वह साध्वी सती उसमें घुस भी न पाती थी, उसके दरोगा पिता से मिले हुए अभिमान और बाह्याडंबर की प्रवृति का भी इस कार्य में विशेष भाग था। उस प्रत्यक्ष कारण के पीछे ये अप्रत्यक्ष कारण कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार प्रेमचंद ने जीवन का पूर्णरूप से चित्रण किया। उन्होंने सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभावों का – बातावरण, परिस्थिति, स्वभाव, शिक्षा तथा जीवन के विशेष मनोवैज्ञानिक क्षणों के प्रभावों का – दिग्दर्शन कराया।

पूर्व अध्ययन :

चरित्र–प्रधान उपन्यास साहित्य पर 19वीं एवं बीसबीं सदी में कई बहुमूल्य कार्य हुए हैं, जिसमें सामाजिक गतिविधियों के विभिन्न तथ्यों को रेखांकित किया गया है। पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के तहत विभिन्न आचार्यों द्वारा संपादित कार्यों का अवलोकन किया गया है। जिसमें किरण द्विवेदी–आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के औपन्यासिक पात्र, पूर्वांचल, 2008, शिव कुमार पाण्डेय–नायक की अवधारणा और प्रेमचंद के उपन्यास, गोरखपुर, 2002, कंचन सिंह–पात्र–परिकल्पना और प्रेमचंद का कथा साहित्य, गोरखपुर, 2001, महेशचन्द्र चौरसिया–प्रेमचंद की कहानियों में निम्नवर्गीय चरित्रों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, भागलपुर, 1989, नरेशचन्द्र गोयल–प्रेमचंद के उपन्यासों में पात्र–संरचना, राजस्थान, 2002, रामलखन यादव–प्रेमचंद के उपन्यासों में विलुप्त पात्रों का औपन्यासिक दृष्टि से अवधारणा , पूर्वांचल, 2003, दिवाकर सिंह–प्रेमचंद के औपन्यासिक पात्रों का जीवन–दर्शन, पूर्वांचल, 2003, बबीता शर्मा– प्रेमचंद के पात्रों का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अध्ययन, राजस्थान, 2000, गीता देवी–आधुनिक सामाजिक पृष्ठभूमि में प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित पात्रों का प्रासंगिकता, वनारस, 1993, श्रवणकुमार मीना–प्रेमचंद का कहानी–साहित्य : चरित्र–चित्रण के विविध आयाम, प्रक्रिया एवं स्वरूप, राजस्थान, 1990, शेख साजिद–प्रेमचंद के साहित्य में मुस्लिम पात्रों का अध्ययन, बरहामपुर, 1993। उपरोक्त पुस्तकों का अवलोकन प्रस्तुत शोधकार्य में किया जाएगा।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत आलेख की प्रविधि विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। प्रेमचंद के संबंधित उपन्यासों से एवं अन्य संबद्ध ग्रन्थों से सामग्री का संकलन, चयन, वर्गीकरण, विवेचन, विश्लेषण एवं निष्कर्ष–स्थापन क्रमशः संपन्न किया गया है। हिन्दी के अन्य चरित्र–प्रधान उपन्यासों से प्रेमचंद के उपन्यासों का वैशिष्ट्य प्रदर्शन के निमित तुलनात्मक पद्धति का भी अवलम्ब लिया गया है।

निष्कर्ष :

प्रेमचंद में चरित्र–चित्रण की एक ऐसी विशेष प्रतिभा थी जो अन्य उपन्यासकारों में नहीं मिलती। अन्य लेखकों ने चरित्रों का जीवन से बिल्कुल ही मिलता जुलता चित्र खींचने का प्रयत्न किया है। भौतिक जगत में जिस प्रकार के मनुष्य मिलते हैं उनकी ठीक प्रतिकृति उन्होंने उपन्यासों में चित्रित की। परंतु जीवन का अनुकरण मात्र कला नहीं है, वरन् जीवन के दूषित और असुंदर स्थलों को आदर्शवाद की पवित्र गंगा में धोकर एक सुंदर रूप में उपस्थित करना ही वास्तविक कला है। यह कला प्रेमचंद के अतिरिक्त अन्य उपन्यासकारों में बहुत ही कम थी। प्रेमचंद में वह सृजनात्मक कल्पना थी जिसके द्वारा उनकी रचनाओं में अद्भुत सौन्दर्य आ गया है। चरित्र–प्रधान उपन्यास लिखने में प्रेमचंद हिन्दी में अद्वितीय है। प्रेमचंद ने अपने जीवन के कई अदभूततियां लिखी हैं। तबसे लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में ना ही उनके जैसा कोई हुआ है और ना ही कोई और होगा। अपने जीवन के अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर उनका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा जहां उन्होंने अनेक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया और अपना साहित्य– सृजन करते रहे। साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है। उन्होंन कहानी और उपन्यास के माध्यम से लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम किया उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास और कहानियां आज भी प्रासंगिक हैं।

संदर्भ–स्रोत :

1. डॉ. कुमार., बिमल(1965) आधुनिक हिन्दी साहित्य., पराग प्रकाशन, पटना ।
2. जैन., डॉ. कुमारी नगीना (1976) आंचलिक और हिन्दी उपन्यास, अक्षर प्रकाशन, प्रा.लि., 2/36, दरियागंज, दिल्ली।
3. मदान, डॉ. इन्द्रनाभ (1925) आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. गुप्त., प्रकाशचन्द्र (1981) आधुनिक हिन्दी साहित्य, आलोक प्रकाशन, बीकानेर।
5. डॉ. बेचन, (1963) आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास., सन्मार्ग प्रकाशन, गोलारोड दिल्ली।
6. राय, डॉ. गोपाल (1973) उपन्यास का शिल्प– बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
7. टंडन., डॉ. प्रताप नारायण (1953) हिन्दी उपन्यास, कथा–शिल्प का विकास, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ।
8. अग्निहोत्री, श्री नारायण और शुक्ल,आचार्य (19625) उपन्यास एवं तत्त्व विधान., साधना सदन, कानपुर।